Topic :- Sampling method

4) Quota Sampling — यह वर्गीय निदर्शन का एक रूप है। इस विधि में पहले समग्र को कई वर्गों में विभाजित किया जाता है। इसके पश्चात् प्रत्येक वर्ग से चुनी जाने वाली इकाइयों की संख्या निर्धारित की जाती है। यह निश्चित संख्या को Quota कहलाती है। गणकों को प्रायः इस बात का अधिकार दे दिया जाता है कि वे प्रत्येक वर्ग से अपनी इच्छानुसार निश्चित संख्या में इकाइयाँ छाँट लें।

ex :- मान लो 500 परिवारों का एक न्यादर्श छाँटना है लेकिन घरों से न्यादर्श चुना है इसका निर्णय कर दिया जाता है तथा कार्यकर्त्ताओं से कह दिया जायेगा कि प्रत्येक घर से एक परिवार इच्छानुसार छाँट लें।

2) Multi Stage Sampling :- इस विधि का उपयोग प्रायः बहुत बड़े क्षेत्र से न्यादर्श छाँटने में किया जाता है। इस विधि के अनुसार चुनाव स्तरों में किया जाता है। ex :- यदि एक बड़े नगर से कुल 10 घरों का न्यादर्श निकालना है तो निम्नलिखित विधि का उपयोग किया जाता है :

a) समस्त नगर को कई सजातीय क्षेत्रों में बाँटा जाता है। जहाँ तक हो सके प्रत्येक क्षेत्र समान क्षेत्रफल का हो तथा उस क्षेत्र के समस्त निवासियों में समानता हो।

b) प्रत्येक क्षेत्र से दो प्राथमिक न्यादर्श उपक्षेत्रों का चुनाव दैवनिदर्शन के आधार पर किया जाता है।

c) प्रत्येक प्राथमिक न्यादर्श उपक्षेत्रों में एक गली समूह

दैवनिदर्शन के आधार पर चुना जाता है। दैवनिदर्शन के

d) प्रत्येक गुच्छ समूह से एक या अधिक बार दैवनिदर्शन के आधार पर चुने। इस प्रकार हम देखते हैं कि अंतिम चुनाव कई स्तरों में होता है। इस प्रकार यह विधि दैवनिदर्शन विधि तथा वर्गीय विधि का सम्मिलित रूप है। यदि सावधानी से प्रयोग किया जाए, तो दोनों विधियों के लाभ प्राप्त हो जाते हैं। इसमें अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व कम से कम इकाइयों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है तथा प्रत्येक क्षेत्र को प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है।

e) Conveniance Sampling :- इसे अनियमित, लापरवाहीपूर्ण, आकस्मिक अथवा अवसरवादी निदर्शन भी कहते हैं। इस विधि के अनुसार सैंपल का चुनाव अनुसंधानकर्ता की सुविधा के अनुसार किया जाता है। यह सुविधा source list की प्राप्य इकाइयों से संपर्क स्थापित करने की योग्यता, धन तथा समय के संबंध में हो सकती है। यद्यपि यह विधि अत्यंत अवैज्ञानिक है, फिर भी बहुत बड़ी संख्या में अनुसंधान इसी विधि द्वारा सैंपल निकाल कर किए जाते हैं। प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के सामने अपनी निजी सीमायें होती हैं तथा बहुत कम सैंपल ऐसे होते हैं जिन्हें ज्यों का त्यों लागू किया जा सके। अतएव सैंपल का चुनाव करते समय सदैव ही अनुसंधानकर्ताओं को अपनी सीमाओं का ध्यान रखना पड़ता है।

सुविधापूर्ण निदर्शन का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जा सकता है :-

a) जब समग्र पूर्णतया स्पष्ट रूप से परिभाषित न किया जा सके।

Scanned with CamScanner

3) जब सैंपल की इकाई स्पष्ट न हो।
c) जब पूर्ण उद्गम सूची प्राप्त न हो।

इस प्रकार नामों को टेलीफोन डायरेक्टरी से नोट करना, अकस्मात किसी भी मिलने वाले व्यक्ति को शामिल कर लेना, इत्यादि इसी विधि के अंतर्गत आते हैं।

4) Self Selected Sampling :- कभी-कभी सैंपल चुना नहीं जाता, बल्कि संबंधित व्यक्ति स्वयं ही अपना नाम देकर सैंपल के अंग बन जाते हैं।

ex:- मान लिया कि किसी कंपनी को पता लगाना है कि लोगों ने किसी विशेष रेडियो प्रोग्राम को कितना पसंद किया। ऐसी दशा में वह रेडियो द्वारा इस बात की घोषणा करवा देगा कि उसे सुनने वाले अपना-अपना मत प्रकट करें। इस प्रकार जो लोग इस घोषणा के उत्तर में अपनी राय भेजेंगे, वे ही सैंपल के अंग बन जाते हैं।

Scanned with CamScanner